इति विज्ञापितो राज्ञा ध्यानस्तिमितलोचनः ।

क्षणमात्रमृषिस्तस्थौ सुप्तमीन इव ह्रदः ।।73।।

अन्वय इति राज्ञा विज्ञापितः ऋषिः ध्यानस्तिमितलोचनः क्षणमात्रं सुप्तमीनः ह्रद इव तस्थौ।

अनुवाद इस प्रकार राजा द्वारा निवेदन किए जाने पर महर्षि वशिष्ठ, मछलियों के सो जाने पर शान्त हुए सरोवर की भांति, क्षणभर के लिए ध्यान में नेत्र बन्द कर निश्चल हो गए।

टिप्पणियाँ

इति इस प्रकार से, पूर्वोक्त प्रकार से।

विज्ञापितः वि उपसर्ग धातु ज्ञा णिच् (पुक्)क्त। (इस प्रकार) सूचित किया गया। 'ऋषि' का विशेषण है।

ध्यान मयानेन स्तिमिते लोचने यस्य सः (बहुव्रीहि). ध्यान के कारण निश्चल (स्थिर-स्तिमित) हैं नेत्र जिसके ऐसा ऋषि।

विशेष प्रस्तुत श्लोक में वशिष्ठ ऋषि की तुलना शान्त जल वाले सरोवर से की गई है जिसमें मछलियों सो रही हैं। मछलियों के चलने से सरोवर का जल चंचल और उद्वेलित हो जाता है। पर जब मछलियाँ सो रही हो तो सरोवर शान्त रहता है। ध्यान की अवस्था में वशिष्ठ ऋषि का मन भी इस प्रकार शान्त तथा स्थिर था जिस प्रकार मछलियों के सो जाने पर सरोवर का जल शान्त रहता है। संस्कृत साहित्य में नेत्रों की तुलना मछली

से की जाती है तथा स्थिर जल वाला सरोवर शान्त मन का उपयुक्त उपमान माना जाता है।

अतः प्रस्तुत स्थल में आँखें मूंदकर ध्यान करते हुए वशिष्ठ की प्रस्तुत.मौन सरोवर से तुलना करना अत्यधिक उपयुक्त है। उचित उपमा का यह सुन्दर उदाहरण है। महाकवि कालिदास की उपमा की यह विशेषता है कि वे अपने काव्य में जीवन से सम्बन्ध रखने वाले साधारण, जाने.पहचाने पदार्थों में से उपमानों को चुनते हैं। प्रासंगिक अनुकूलता ही उनकी उपमाओं की सबसे बड़ी विशिष्टता है।